

often without recognisable characters and present the audience with almost mechanical puppets; if a good play has to have a fully explained theme, which is neatly exposed and finally solved, these neither have a beginning nor an end; if a good play is to hold the mirror to nature and portray the manners and mannerism of the age in finely observed sketches, these seem often to be reflections of dreams and nightmares; if a good play relies on witty repartee and pointed dialogue, these often consist of incoherent babblings.

(The Theatre of the Absurd, p. 21-22, by Martin Esslin)

अर्थात् यदि माना जाय कि किसी प्रभावशाली नाटक में या तो कलापूर्ण कहानी की सृष्टि की जाती है, या पात्रों का सूक्ष्म मार्मिक चरित्र-चित्रण पाया जाता है, अथवा विशद् कथावस्तु का समावेश किया जाता है, अथवा अच्छी कृति तत्कालीन समाज का आचार-व्यवहार और जीवन शैली-दृशिष्ट्य का दर्पण होती है, या सुष्ठु कृति में श्लेष-गर्भित विदग्ध प्रत्युत्पन्नमतिपूर्ण क्षिप्रोत्तर (हाजिर जवाब) पाया जाता है, पर इनमें अर्थात् एन्सर्ड ड्रामा में यह कुछ नहीं होता। न तो कोई कहानी या कथावस्तु होती है, न कोई चरित्र-चित्रण या कर्म का प्रोत्साहन और प्रयोजन। विसंगत नाटक के पात्र मशीन से नाचनेवाली कठपुतली के समान निष्प्रयोजन घूमते दिखाई पड़ते हैं। चरित्रों के सूक्ष्म विश्लेषण के स्थान पर स्वप्निल जगत के दुःस्वप्न ही मानो चिघाड़ते रहते हैं। विदग्ध संवादों की जगह असम्बद्ध वेतुकी प्रलापमयी बक-बक पाई जाती है।”

विसंगत नाटकों का जन्म सन् 1942 में फ्रांस के सार्त्र, कामु, गिरौडाक्स (Giraudox) के मस्तिष्क में एक नए रूप में एक साथ हुआ। इस नाट्यकारों ने जीवन की निस्सारता और जीवन-आदर्शों की निष्प्राणता का आभास कराया। कालान्तर में एन्सर्ड नाट्यकारों ने इनमें नैराश्य, विक्षिप्ति, स्वप्न-प्रलाप का ऐसा गहरा रंग भर दिया कि मानो यही मानव-जीवन का असली रूप है, इसको सिद्ध करने के लिए किसी तर्क या प्रमाण की आवश्यकता ही नहीं। जब जीवन का कोई पूर्वानुभव प्रमाण बन ही नहीं सकता तो कोई तथ्य सिद्ध किया भी कैसे जाय ? फ्रांस में उत्पन्न यह भ्रंभावात भिन्न-भिन्न देशों के नाट्यकारों को झकझोरता रहा। रूस का एडोमोव (Adamov), आयरलैंड का वेकेट, रूमानिया का आयोनेस्को (Ionesco), इंग्लैंड का पिटर इसके प्रभाव से अछूते न रहे। कई आलोचकों ने, विशेषकर मार्टिन एसलिन ने जर्मन नाट्यकार ब्रेख्त के प्रारम्भिक नाटकों को इसी एन्सर्ड नाटकों की कोटि में रखा है। पर ब्रेख्त क्रमशः समाजवाद और रूसी साम्यवाद से प्रतिबद्ध होता गया और उसने अपने को एपिक थिएटर का आविष्कारक सिद्ध कर दिया। कालान्तर में ब्रेख्त ने अपने थिएटर को (Didactic Socialist Theatre) डाइडेक्टि सोशलिस्ट थिएटर नाम से अभिहित किया। इस शैली के नाटक Alienation स्वत्त्व हस्तान्तरण में विश्वास करते हैं।

ब्रेख्त और वेकेट में अन्तर

ब्रेख्त का उद्देश्य रहता है दर्शकों के बौद्धिक चिन्तन और उनकी आलोचनात्मक शक्ति को उद्दीप्त करना। पर वेकेट का तो नारा है कि 'Nothing is more real than nothingness' अर्थात् 'इस जगत में रिक्तता से बढ़कर और कोई वास्तविकता या सत्य नहीं।'।

दूसरा अन्तर है कि ब्रेख्त बुद्धि-विकास और न्यायोचित स्वत्त्व हस्तान्तरण में विश्वास करता है, पर वेकेट भावात्मकता, एकाकीपन और मूल्यहीनता को प्रधान मानता है।

तीसरा अन्तर है कि ब्रेख्त अपने नाट्य-दर्शक को तत्कालीन सामाजिक एवं राजनैतिक समस्याओं से जूझने के लिए प्रेरणा देता चलता है। जबकि वेकेट मानता है कि विसंगत का कृमि मानव-जीवन के मूल को इतना चाट गया है कि न केवल ईश्वर ही स्वर्ग में मर गया है, मानव भी आकाश मंडल के नीचे मरा पड़ा है। मानव-जाति से कुछ होने की आशा करना व्यर्थ है।

चौथा अन्तर समाज के बाह्य जगत् और अन्तर्जगत् के विवरण और विश्लेषण के सम्बन्ध में मिलता है। ब्रेख्त बाह्य जगत् की स्थिति सुधारने और समाज को आधुनिक युगोपयोगी जीवन जीने के लिए दर्शकों को स्पष्टतया प्रोत्साहित करता है। पर Absurd Drama विसंगत नाटक इसमें विश्वास नहीं करता।

Irving Wardle का कथन है कि

"The substitution of an inner landscape for the outer world; the lack of any clear division between fantasy and fact; a free attitude towards time; a fluid environment which projects mental condition; and an iron precision of language and construction as the writer's only defence against the chaos of living experience."

(New English Dramatists, 1968)

अर्थात् विसंगत नाटक बाह्य जगत् के विवरण की क्षतिपूर्ति अन्तर्जगत् के प्रकृति-चित्रण से करते हैं। उनमें स्वर कल्पना एवं वास्तविक तथ्य के मध्य कोई स्पष्ट व्यावर्तक रेखा नहीं। समय के प्रति वे सर्वथा लापरवाह हैं, निजी मानसिक स्थिति के अनुरूप वे बाह्य वातावरण को तोड़ते-मोड़ते हैं। उनके जीवन से अनुभव में सर्वत्र व्याप्त अराजकता से समाज-रक्षा का एकमात्र कवच उनके पास सुव्यवस्थित भाषा और उसकी गठन-प्रक्रिया से है।"

— न्यू इंगलिश ड्रामाटिस्ट-1968, इरविंग वार्डले

पांचवां अन्तर नैतिकता सम्बन्धी है। ब्रेख्त धर्म-निरपेक्ष होने का कारण आत्मा या ईश्वर के जीवन-मरण की समस्या पर ध्यान नहीं देते। जो नैतिकता समाज को समृद्ध बनाती और सत्ता-स्वत्त्व का वितरण समुचितरूपेण कर सकती है, वह मान्य है। शेष सभी अमान्य। पर विसंगत नाटककार का उद्देश्य है—God is dead अर्थात् ईश्वर मर चुका है। अकृत्रिमता अन्ध विश्वास से कहीं अधिक ग्राह्य है। ईश्वर की मृत्यु से मानव-

समाज पर विशेष रूप से नैतिक अराजकता का भार आ पड़ा है। इससे नया कन्डक्ट कोड (चारित्रिक नियम) बन गया है, जो युद्ध भयभीत (Pandour) कहलाता है।

आठवें दशक में धीरे-धीरे एन्सर्ड थिएटर को एंटी-थिएटर की उपाधि मिलने लगी। योरोप में इसका अन्त्येष्टि-संस्कार देखकर भारत के नाट्यकार और नाट्य निर्देशक नया मार्ग ढूँढ़ने लगे। फिर भी मणि मधुकर, सुरेन्द्र वर्मा, रमेश वरूणी, वृजमोहन शाह एवं नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा की अलकाजी परम्परा इस शव को कभी-कभी पुनरुज्जीवित करने का प्रयास कर रही हैं। अब भी वेकेट के प्रारम्भिक नाटक अभिनीत हो रहे हैं।

विसंगत नाट्यकारों का सबसे बड़ा योगदान एक नई रंगमंचीय भाषा का निर्माण है, जिसमें देश की सीमा तथा भाषा वैभिन्न की कठिनाई की दीवार ढह रही है। रूस इस अनुसन्धान में सबसे आगे है। यदि हमारे देश में भारत की नाट्यमुद्राओं का सहारा लेकर सांकेतिक भाषा का उपयोग होने लगे तो निश्चय ही देश की एकता-स्थापन में सहायता मिले।

नाट्य-प्रदर्शन की बड़ी महिमा है। इसके दो क्षेत्र नाट्य-धर्म और लोक-धर्म एक दूसरे के पूरक हैं। कालिदास ने दोनों की संगति बिठाकर संस्कृत समाज के योग्य नाट्य-प्रदर्शन प्रस्तुत किया। इस देश का मूल सिद्धांत है—

‘आपरितोषात् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोग विज्ञानम्’

‘अभिज्ञान शाकुन्तलम्’

ग्रंथकार अनुक्रमणिका

अ

अवुलफजल 312
अमरनाथ गुप्त 384
अमानत 354
अमानसिंह गोटिया 157
अम्बिकादत्त त्रयस 157, 164
अमृतलाल नागर 388
अज्ञात 393
अज्ञेय 353
अर्नाल्ड हिचलिफ 18, 81

आ

आइन्स्टाइन 16
आइओनेस्को 15, 19
आगाहश्च 261
आरसीप्रसाद सिंह 328, 355
आर्थर मिलर 19
आलेग केरेन्स्की 19
आस्कर वाइल्ड 275
आस्त्रावस्की 271

इ

इन्द्र 28, 29
इन्द्रनाथ मदान 20
इन्द्राणी 28
इब्सन 19, 271, 272, 264, 270,
289, 277, 351
इलियट 351

ई

ईट्स 276, 351
ईसरउड 351

उ

उदयशंकर भट्ट 32, 282, 297, 298,

308, 319, 326, 387

उदितनारायण लाल 171
उपेन्द्रनाथ अशक 268, 277, 290
उमापति 48, 49
उर्वशी 28

ए

एडवेरमन 19
एडवर्ड थाम्पसन 208
एडामाव 14, 19
एडिसन जोसेफ 170
एलवी 15
एवरक्राम्बी 351
एसलिन 14, 18

ओ

ओल्डेनवर्ग 29
ओसबार्न 15

क

कपिलेन्द्रदेव 45
कर्णपूर 94
कात्यायन 28
कामु 15, 360
कातिकप्रसाद 157
कार्लयास्पर्स 361
कार्लवार्य 361
कालिदास 26, 263, 270
कार्लवेक्सन 361
काशीनाथ 157
किर्कगार्ड 360
किलोकर 177
की F. E. 177
केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' 350

केशवराम भट्ट 171

कौटिल्य 32, 33

कृपानाथ मिश्र 269

कृष्णजीवन लच्छीराम 99

कृष्णदेवशरण सिंह 157

ख

खड्गवहादुर मल्ल 164

खांडेलकर पी० एस० 128

ग

गारसावितासि 137, 245

गार्ल्सवर्दी 276, 277

गिब्सन 351

गिरिजाकुमार माथुर 328, 339

गिरिराज किशोर (A) 393

गिरीशचन्द्र घोष 179

गिरीश रस्तोगी 20

ग्रियर्सन 44, 179

गीब्स एडविन 179

गुरु गोविन्दसिंह 90

गुलाबराय 133, 207, 251

ग्रेन्निग्ल 361

गोपाल अत्ता 84

गोपीनाथ पुरोहित 170

गोविन्ददास सेठ 269, 277, 298,
315, 316

च

चतुरसेन शास्त्री 37, 311, 316

चार्ल्स गैरोविट्स 19

चेखव 19, 271, 277

चन्द्रगुप्त विद्यालंकार 297

चंद्रशेखर 395, 396

ज

जगज्योतिर्मल्ल 53

जगदीशचंद्र माथुर 277, 290, 359

जयशंकर प्रसाद 179-261, 324

ज्योतीन्द्रनाथराजा 176

ज्योतिरीश्वर 48

ज्वालाप्रसाद मिश्र 163, 170, 176

जानकीवल्लभ शास्त्री 350, 355, 351

जार्ज बर्नार्ड शा 275

जीनलुइस वाराल्ट 19

जोला 19, 270, 277

जोसेफ मैकमहोन 11

ट

टाइनान 17

टेनेसी विलियम 19

ट्रेल 39

ठ

ठाकुर टा० ई० गुहा 128, 207

ड

डंकन 251

डब्ल्यू० राबर्ट्सन 275

डानचेंको 19

डालाश्रास्नोदार 264

ड्रिंक वाटर 351

डेविड टुटेव 17

डेविस 271

त

ताम्हणकर नांधों 283

तोताराम 157

द

दयानाथ भ्मा

दामोदर सप्रे 163

दामोदर शास्त्री 157

दास गुप्त 30, 131, 163

दीनबन्धु मित्र 175, 179, 271

दुष्यन्त कुमार 353, 357

देवकीनन्दन त्रिपाठी 163, 166

दैत्यारि ठाकुर 84

द्विजभूषण 84

द्विजेन्द्रलाल राय 253, 271, 294

ध

धर्मवीर भारती 290, 328

ध्रुवदास 69

न

नगेन्द्र 384

नरेश मेहता 353, 354, 355, 356

नागार्जुन 351

नारायणप्रसाद वेताव 258

निकल अल्लारडीएल 152, 271

नित्यानन्द तिवारी 256

नेमिरोविच 19

नेवाज कवि 97

नन्ददुलारे वाजपेयी 255, 289

प

पद्मलाल पुन्नलाल बख्शी 321

पिटर 15

पुरुषोत्तम कवि 167

प्रतापनारायण मिश्र 156, 157

प्रभाकर माचवे 355

पृथ्वीनाथ शर्मा 277, 290, 317

प्रेमचन्द 253, 276

प्लांक 16

पोल तिल्लिच 361

फ

फ्रायड 270

ब

बंदीदीन दीक्षित 163, 318

बकलैंड सी० ई० 179

बद्रीनारायण प्रेमघन 157, 163

बनारसीदास 89

बर्ग शां 274

बनार्ड शा 257, 276

बलदेव 163

बालकृष्ण भट्ट 156, 159

बीरेन्द्र नारायण 354

बेकेट 360

बेचन शर्मा उग्र 297, 298

बोहर 16

ब्रजनाथ (A) 171

ब्रजवासीदास 74

ब्रह्मा 19

ब्रेख्त 19, 315

भ

भगवतीचरण वर्मा 277, 281, 289
290, 337, 338

भरत मुनि 25, 26, 109

भवभूति 263, 270

भवालकर 283

भारत भूषण अग्रवाल 357, 359

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र 117, 171

भास 263

भीमसेन निर्मल 169

भीष्म साहनी 366

भुवनेश्वर 315

भूदेव शुक्ल 94

म

मंगला प्रसाद (A) 352

मथुराप्रसाद उपाध्याय (B) 171

माइकेल मधुसूदन दत्त 171, 179

महावीर 27

माखनलाल चतुर्वेदी 315, 316

माधव देव 84

माधव शुक्ल 262

मार्क्स 270

मार्सेल 361

मेटरलिक 289, 322

मेसफील्ड 351

मैक्समूलर 29

मैथिल गोकुलनाथ 95

मैथिलीशरण गुप्त 315, 325, 349

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या 157

य

यशपाल 93, 366

यशवंतसिंह महाराज 104

र

रणछाड़ोदास भाई 128

रघुराम नागर 98

रमेश चौधरी आरिगपूडि 284

रमेश मेहता 277

रवीन्द्रनाथ ठाकुर 179, 247

राजशेखर 130, 177

राजनन्द 392

रामगोपाल पांडे 320

राधाकृष्णदास 156, 158

राधाचरण गोस्वामी 157, 161

राधेश्याम कथावाचक 260

रामचरण ठाकुर 84

रामकृष्ण वर्मा 171

रामचन्द्र शुक्ल 127, 156

रामकृष्ण शिलीमुख 255

रामधारीसिंह दिनकर 328, 344, 349

रामनरेश त्रिपाठी 281, 315

रामबाबू सक्सेना 259

रामविलास शर्मा 359

रामवृक्ष बेनीपुरी 315

रामानन्द तर्क रत्न (A) 175, 177

रामेश्वरसिंह काश्यप 353

रायकृष्णदास (A) 187

रामसिंहासन राय 353

रावर्ट्सन 275

रावर्ट कारिगिन 14

रूप गोस्वामी 97

रिचर्ड वावेल्स 360

रेवतीशरण शर्मा 277

ल

लक्ष्मीनारायण मिश्र 252, 264, 265;

272, 290, 297, 298, 299;

301, 303, 305, 307

लक्ष्मीनारायण लाल 253, 290, 354

लेसिंग 312

व

वरदाचार्य 95

वाजिद अलीशाह 293, 394

वारमले 351

वामनाचार्य गिरि 163

वाल्टर बेंजामिन 12, 13

वाल्टर पीटर 244

वाल्मीकि 263

विद्यापति 50

वियोगी हरि 318

विपिनकुमार अग्रवाल 392

विलियम्स 19

विलियम ब्योर 213

विश्वनाथ पांडुरंग दांडेकर 176

विश्वनाथसिंह महाराज 107

विष्णु प्रभाकर 384

वीर नारायण 52

वृजरत्नदास 126, 141

वृन्दावनदास 70

वृन्दावनलाल वर्मा 95

वृषाकपि 28, 351

वेकेट 13, 19

वेडेकाइण्ड 275

वेद कवि 95

वेद व्यास 263

श

शंकरदेव 46, 84

शॉ वर्नाडि 270, 277, 351

शारदातनय 26

- शाह जी 95
 शालिग्राम 157
 शिवदानसिंह चौहान 386
 शुक्ल यजुर्वेद 30
 शेक्सपियर 139
 श्यामसुन्दरदास 133, 136
 श्रीकृष्ण मिश्र 91
 श्रीनिवासदास लाला 155, 170, 351
 स
 सत्येन्द्र 384
 सर्वेश्वरदयाल (A) 360
 सार्त्र 366
 सिंगी 276
 सिंजे 351
 सिद्धनाथ कुमार 328, 339, 344, 355, 356, 390, 391
 सिद्धकण्ठपा 36
 सिम्पसन 15
 सियारामशरण गुप्त 297, 298, 326
 सीताराम लाला 170
 सुमित्रानन्दन पन्त 329-336
 सूरदास 110
 सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' 328, 352, 359
 सूर्यनारायण मूर्ति 286
 सूर्यप्रसाद मिश्र 171
 सैलवेन लेवी 29
 सोमराज दीक्षित 95
 स्टानिस्लावस्की 17
 स्टिनवर्ग 271
 स्टीफेन फिलिप्स 151
 ह
 हंसकुमार तिवारी 355, 356
 हजारीप्रसाद द्विवेदी 264, 353
 हरप्रसाद शास्त्री 52
 हरमैन संडरसन 274
 हरमैन कांट 21
 हरिऔध अयोध्यासिंह उपाध्याय 168, 320
 हरिकृष्ण प्रेमी 295, 310, 315, 326
 हरिमंगल मिश्र 376
 हरिहरदत्त दुबे 164
 हबीब तनवीर 366
 हाप्टमैन 19, 271
 हिचलिफ 18
 हिंडमन 264, 353
 हेडगेर 361
 हृदयराम 88
 हेवल फ्रेडरिक 271